ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

समस्त देशवासियों को

योगिराज श्री कृष्ण

के

5243वें जन्मोत्सव की

हार्दिक शुभकामनाएँ

वर्ष 41, अंक 44 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 20 अगस्त, 2018 से रविवार 26 अगस्त, 2018
विक्रमी सम्वत् 2075 सृष्टि सम्वत् 1960853119
दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

शोक! शोक!! शोक!!!

आर्यसमाज की छाया के संस्कारों से पले बढ़े – आर्य कुमार सभा एवं आर्य समाज ग्वालियार के सक्रिय कार्यकर्त्ता

महान नेता, पूर्व प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी का निधन

राष्ट्रीय शोक : भारत सहित अनेक देशों ने सम्मान में झुकाए अपने राष्ट्रीय ध्वज

आर्यसमाज की ओर से सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य एवं दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य ने किया शोक व्यक्त

श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ऐसे महान नेता थे जो केवल और केवल राष्ट्र की सोचते थे – महाशय धर्मपाल

भारतीय राजनैतिक इतिहास के महा पुरुष, आर्य कुमार सभा के माध्यम से आर्यसमाज के सिद्धान्तों, मान्यताओं तथा महर्षि दयानन्द जी की शिक्षाओं को आत्मसात् करने वाले, आर्य समाज ग्वालियर के कर्मठ एवं सक्रिय कार्यकर्ता के रूप मे कार्य करने वाले, भारत राष्ट के 10वें यशस्वी प्रधानमन्त्री, भारत रत्न श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी का दिनांक 16 अगस्त की सायंकाल नई दिल्ली स्थित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) में निधन हो गया। वे लगभग 94 वर्ष के थे और काफी समय से अस्वस्थ चल रहे थे। उनका पार्थिव शरीर उनके आवास पर अन्तिम दर्शनों के लिए रखा गया था। सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने आर्यसमाज की ओर से पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

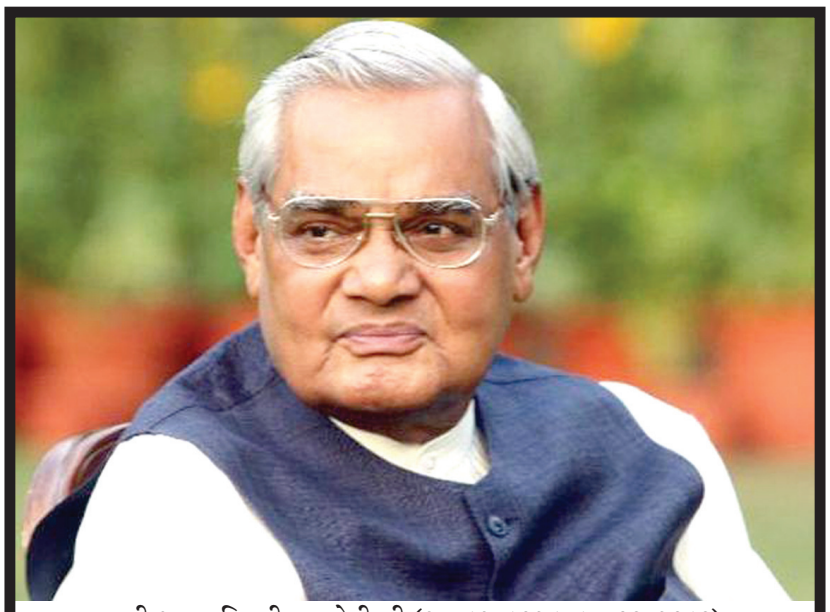

स्व. श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी (25/12/1924-16/08/2018)

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य जी ने अपने वीडियो सन्देश के माध्यम से अपने श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए उनके निधन को राष्ट की अपूर्णीय क्षति बताया।

आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान एवं एम.डी.एच. के चेयरमैन महाशय धर्मपाल जी ने कहा कि अटल जी ऐसे राष्ट्र पुरुष थे जो केवल राष्ट्र की ही बात करते थे। उनकी राष्ट्र भक्ति निसन्देह काबिले तारीफ थी।

सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य ने श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के निधन पर शोक व्यक्त करते हुए कहा कि भारतीय राजनीति में श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी का स्थान अत्युत्तम था। यू.एन. ओ. में हिन्दी में भाषण देने का उन्हें गौरव प्राप्त हुआ। उनके निधन से आर्यसमाज, राष्ट्र और भारतीय राजनीति जो क्षति हुई है, उसकी पूर्ति होना कठिन है। उन्होंने कहा कि श्री अटल बिहारी जी के रूप में उन्होंने एक चमकते सितारे को खो दिया है। उनकी कमी सदैव महसूस होती रहेगी।

– ***सम्पादक***

सम्पादकीय

अटल जी और आर्यसमाज

....राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से तो मेरा प्रथम संपर्क 1939 में हुआ और वह भी आर्य समाज की युवा शाखा, आर्य कुमार सभा के माध्यम से। दरअसल उन दिनों ग्वालियर रियासत थी, जो किसी भी प्रांत का हिस्सा नहीं थी। एक कट्टर सनातनी परिवार से होने के बाद भी अटल जी आर्य कुमार सभा के साप्ताहिक सत्संग में सम्मिलित हुआ करते थे, जोकि प्रति रविवार को प्रात: काल हुआ करता था। एक दिन आर्य कुमार सभा के एक वरिष्ठ कार्यकर्ता और महान विचारक व कुशल संगठक श्री भूदेव शास्त्री ने अटल जी से पूछा, आप शाम को क्या करते हैं?.....

आर्य समाज के आंगन में पले बढ़े किसी महानुभाव के प्राण जब महायात्रा पर निकलते हैं तब कवि की कुछ पंक्तियां अक्सर जेहन में ताजा हो उठती हैं कि–

कलम आज उनकी जय बोल,
जो जला अस्थियाँ बारी-बारी, छिटकाई जिसने चिंगारी।
जो चढ़ गए पुण्य वेदी पर, लिए बिना गरदन का मोल।
कलम आज उनकी जय बोल,
जो अगणित लघु दीप हमारे, तूफानों में एक किनारे।
जल-जलकर बुझ गए किसी दिन, माँगा नहीं स्नेह मुँह खोल।
कलम आज उनकी जय बोल।

बहुमुखी व्यक्तित्व के धनी, देश के पूर्व प्रधानमंत्री, भारत रत्न कवि और राजनेता अटल बिहारी बाजपेयी जिन्होंने अपने सार्वजनिक राजनितिक जीवन में कई बड़ी चुनौतियों का सामना किया और उनपर विजय हासिल की। भारतीय राजनीति के मंच पर विशालकाय व्यक्तित्व के रूप में दशकों तक छाये रहे। देश के 72 वें स्वतंत्रता दिवस के अगले दिन देश की इस आजादी के सिपाही के प्राण अपने 93 वर्ष पूरे करने के पश्चात् महायात्रा पर निकल गये। ये एक अपूर्ण क्षति है जिसे शतकों तक पूर्ण करना कठिन होगा।

25 दिसम्बर 1924 को ब्रह्ममुहूर्त में माता कृष्णा बाजपेयी की कोख से ग्वालियर में अटल जी का जन्म हुआ था। एक कवि घर जन्म लेने वाले इस नन्हें बच्चे के जीवन को कितने लोग भली भांति जानते हैं कि इस दीपक से क्रांति की मशाल किसने बनाया? माना कि डॉ० श्यामा प्रसाद मुखर्जी और पण्डित दीनदयाल उपाध्याय के निर्देशन में अटल जी ने राजनीति का पाठ पढ़ा। पाञ्जन्य, राष्ट्रधर्म, दैनिक स्वदेश और वीर अर्जुन जैसे पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादन का कार्य भी कुशलता पूर्वक करते रहे लेकिन अन्तस् में वह पीड़ा कहाँ से आई जो उन्हें इस देश और समाज के लिए मर-मिटने के लिए मजबूर कर उठी?

अटल जी जब अपने बचपन में थे तब इनके पिताजी स्व कृष्ण बिहारी उंगली पकड़कर उन्हें आर्य समाज के वार्षिकोत्सव में ले जाते थे। धीरे-धीरे आर्य विद्वानों के उपदेश अटल जी को प्रभावित करने लगे। भजनों और उपदेशों के साथ स्वतंत्रता संग्राम की बातें भी उन्हें सुनने को मिलने लगीं। तत्कालीन आर्य समाज उस समय देश वासियों की विचारधारा नहीं बल्कि समूचे राष्ट्र की सत्ता तक बदलने के लिए आमादा था बस यही वह विचार थे जो एक सामान्य से बच्चे अटल को पुरुष से महापुरुष बनने तक खींच लाये। प्रारम्भिक शिक्षा के उपरान्त अटल जी दयानन्द एंग्लो-वेदिक कॉलेज, कानपुर गये जहां बाजपेयी को उच्च शिक्षा मिली राजनीति विज्ञान में परास्नातक की डिग्री ली जब वह छात्र थे तो तब आर्य समाज देश की तंत्रिका का केंद्र था।

– ***शेष पृष्ठ 2 पर***

वेद-स्वाध्याय

वाणी की पवित्रता

सहस्रधारे वितते पवित्रे आ वाचं पुनन्ति कवयो मनीषिणः।
रुद्रास एषामिषिरासो अद्रुहःस्पशः स्वंचः सुदृशो नृचक्षसः। -ऋ. 9/73/7
ऋषिः **पवित्र आङ्गिरसः**।। देवता - **पवमानः सोमः**।। छन्दः **जगती**।।

शब्दार्थ - कवयः मनीषिणः = क्रान्तदर्शी, क्रान्तकर्मा ज्ञानी लोग **वाचम्** = अपनी वाणी को **सहस्रधारे वितते पवित्रे** = हज़ारों धाराओं वाले विस्तृत पवित्रताकारक स्रोत में (सोम-स्रोत में) **आ पुनन्ति** = पूरी तरह पवित्र करते हैं, अतः **एषाम्** = इन मनीषियों के रुद्रासः = प्राण-प्राणरूप माध्यमिक वाणियों **इषिरासः** = दूर तक पहुंचानेवाले, बड़े प्रभावशाली **अद्रुहः** = किन्तु कभी किसी का द्रोह व घात न करने वाले **स्वंचः** = उत्तम व्यवहार करने वाले **सुदृशः** = उत्तम दिव्य दृष्टि-वाले और **नृचक्षसः** = मनुष्यों को ठीक-ठीक पहचान लेने वाले **स्पशः** = दूत की भांति हो जाते हैं।

विनय- ऊपर द्युलोक से सहस्र धाराओं में सोम की वर्षा हो रही है। जहां केवल शुद्ध धर्म की-अशुक्ल, अकृष्ण धर्म की वर्षा होती है उस धर्ममेघ समाधि की अवस्था आने पर ध्यानी लोग इसे अनुभव भी करते हैं। यह शिर के ऊर्ध्वभाग में अनुभूत होती है जहां कि हठयोगी लोग 'सहस्रारकमल' को देखते हैं। वहां अनन्त, अपार ज्ञानसमुद्र है 'सर्वावरण मलापेत'[1] शुद्ध ज्ञान का समुद्र है। उसमें क्रान्तदर्शी और क्रान्तकर्मा ज्ञानी महापुरुष अपनी वाणी को पवित्र करते हैं, उसमें गोता देकर सर्वथा शुद्ध हुई वाणी को बोलते है।। तब उनकी यह वाणी बड़ी चमत्कारिणी शक्ति रखती है। वहां से निकली वाणी द्वारा जो आज्ञा की जाती है वह अमोघ होती है। इसीलिए हम देखते हैं कि महात्मा दिव्य पुरुषों की वाणी व अनुचिन्तन (माध्यमिक वाणी) विशेष प्रभाव रखती है। वे अपने भाषण व चिन्तन से अपने दूत का, अपने वशवर्ती नौकर का, काम ले-सकते हैं। दूर-दूर के विषय में वे जो सोचते हैं या बोलते हैं, वह वहां पूरा हो जाता है, पर यह तो दूर की बात है। क्या हम अपेक्षया उन्नत श्रेष्ठ पुरुषों को नित्य नहीं देखते कि उनका भाषण व विचार दर तक प्रभाव पहुंचानेवाला होता है, कभी किसी को भी हानि न पहुंचाने वाला होता है, उत्तम व्यवहार-युक्त होता है, उत्तम दिव्य दूरदृष्टि से देखकर बोला हुआ होता है और मनुष्य को ठीक-ठीक देखकर, पहचानकर बोला हुआ होता है? यदि किन्हीं के भाषण व विचार में ये उक्त गुण दिखलाई देते हैं तो यह इस बात का लक्षण है कि उनकी वाणी पवित्र हो रही है, पवित्रताकारक सोमधारा का स्पर्श प्राप्त कर रही है, 'वितत सहस्रधार पवित्र' की ओर बढ़ रही है।

1. योगदर्शन 4/31

-: साभार :- **वैदिक विनय**

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

अटल जी और आर्यसमाज

आर्य समाज स्वामी दयानन्द जी द्वारा स्थापित विचारों को जब अटल जी ने आत्मसात किया तो हिन्दू राष्ट्रवाद की प्रतिबद्धता की भावना उनके मन में जगी और जल्द ही ग्वालियर में आर्य समाज की एक युवा शाखा आर्य कुमार सभा के महासचिव नियुक्त हो गये। इसलिए बाजपेयी जी की असली पहचान का आंकलन करने के लिए आर्य समाज में अपने वैचारिक पालन-पोषण को भी ध्यान में रखना चाहिए इस बात को बाजपेयी जी स्वयं स्वीकार करते हुए कहते थे कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से तो मेरा प्रथम संपर्क 1939 में हुआ और वह भी आर्य समाज की युवा शाखा, आर्य कुमार सभा के माध्यम से। दरअसल उन दिनों ग्वालियर रियासत थी, जो किसी भी प्रांत का हिस्सा नहीं थी। एक कट्टर सनातनी परिवार से होने के बाद भी अटल जी आर्य कुमार सभा के साप्ताहिक सत्संग में सम्मिलित हुआ करते थे, जोकि प्रति रविवार को प्रातः काल हुआ करता था। एक दिन आर्य कुमार सभा के एक वरिष्ठ कार्यकर्ता और महान विचारक व कुशल संगठक श्री भूदेव शास्त्री ने अटल जी से पूछा, आप शाम को क्या करते हैं?

अटल जी ने कहा, कुछ नहीं इस पर उन्होंने उन्हें संघ की शाखा में जाने का आग्रह किया और इस प्रकार ग्वालियर में उनका शाखा जाने का क्रम प्रारम्भ हुआ। यही उनका आर.एस.एस. के साथ पहला परिचय था। किन्तु संघ के आंगन में लगा यह वटवृक्ष बहुत पहले ही पौधे के रूप में आर्य समाज की क्यारी में ही देशभक्ति के गीतों और विचारों से सींचा गया था। बाजपेयी जी हिन्दू जीवन में कुप्रथाओं और रूढ़िवादी विचारों को तोड़ने के लिए आर्य समाज के बहुत ऋणी रहे। अटल जी का मानना था कि देश की बंटी हुई राजनीति को जोड़ने की आवश्यकता है। यह केवल सत्ता के लिए ही नहीं, बल्कि विघटनकारी शक्तियों से लोहा लेकर राष्ट्रीय हितों की रक्षा करने के लिए भी जरूरी है।

आर्य समाज के पालने में, पले बढ़े अटल जी जीवन के उच्च आदर्शों को स्थापित करते हुए आगे बढ़ते चले गये, देश के शीर्ष पद तक जा पहुंचे अटल जी से जब एक बार आर्य समाज के बारे में पूछा गया तब उन्होंने कहा था कि अगर आर्यसमाज न होता तो भारत की क्या दशा हुई होती इसकी कल्पना करना भी भयावह है। आर्यसमाज का जिस समय काम शुरु हुआ था कांग्रेस का कहीं पता ही नही था। स्वराज्य का प्रथम उद्घोष महर्षि दयानन्द ने ही किया था यह आर्यसमाज ही था जिसने भारतीय समाज की पटरी से उतरी गाड़ी को फिर से पटरी पर लाने का कार्य किया था। अगर आर्यसमाज न होता तो भारत-भारत न होता। अटल जी के विचारों को इस उत्तुंग शिखर पर ले जाने में आर्य समाज का जो योगदान रहा वह कभी भुलाया नहीं जा सकता इस कारण लेख के अंत में दावे के साथ कह सकता हूँ अगर आर्य समाज न होता तो अटल बिहारी बाजपेई जी भी अटल बिहारी बाजपेई जी न होते। इसी के साथ मैं आर्य सन्देश परिवार की ओर से अपने श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं।

अटल जी तुम्हें शत्-शत् नमन। - **सम्पादक**

वेद प्रचार सप्ताह व श्रावणी पर्व

आर्यसमाज इन्द्रपुरी नई दिल्ली-12 का वेद प्रचार कार्यक्रम 8-9 सितम्बर, 2018 को आयोजित किया जाएगा। इस अवसर पर आचार्य कुंवरपाल शास्त्री जी के प्रवचन एवं श्री गौरव आर्य जी के भजन होंगे। आप सब अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर धर्मलाभ प्राप्त करें।

- नरेश वर्मा, प्रधान

श्रावणी पर्व व जन्माष्टमी

आर्यसमाज कालकाजी में 30 अगस्त से 2 सितम्बर तक श्रावण एवं जन्माष्टमी पर्व का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर वेद कथा डॉ. वेदपाल जी एवं भजन श्री लक्ष्मीकान्त कन्दपाल जी के होंगे। वेद पाठ गुरुकुल गौतम नगर के ब्रह्मचारी करेंगे।

- रमेश गाड़ी, प्रधान

महाशय धर्मपाल सार्वदेशिक धर्म प्रचार प्रकल्प के अन्तर्गत देश-विदेश में वैदिक धर्म एवं भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार हेतु

प्रचारकों की आवश्यकता

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली की ओर से देश-विदेश में आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार की शृंखला आरम्भ की जा रही है, जिसके लिए सुयोग्य उम्मीदवारों के आवेदन आमन्त्रित हैं। कुल पद : **भारत हेतु 20** तथा **विदेशों हेतु 5**। इच्छुक अभ्यर्थी के लिए वांछित योग्यताएं निम्न प्रकार हैं -

1. आर्य वीर दल का प्रशिक्षण प्राप्त हो। 2. गुरुकुलीय आर्ष पाठ विधि के साथ-साथ आधुनिक विषयों की भी शिक्षा प्राप्त की हो। 3 यज्ञ, भजन, प्रवचन के साथ-साथ सभी वैदिक संस्कार सम्पन्न कराने में निपुण हो। 4. आर्यसमाज के प्रचार की हार्दिक इच्छा रखता हो। 5. युवा जिनकी आयु 18 से 30 वर्ष के मध्य हो।

चयनित अभ्यर्थी की प्रथम नियुक्ति भारत के किसी भी राज्य में तथा विशिष्ट अंग्रेजी भाषा ज्ञान और कार्य के अनुभव के उपरान्त भारत से बाहर किसी भी देश में की जाएगी। पूर्ण योग्यता होने की दृष्टि में सीधे विदेशों में नियुक्ति की जा सकती है। सम्मानित मानदेय के साथ-साथ वाहन व्यय, मोबाईल व्यय, स्वास्थ्य बीमा, आवास की सुविधा प्रदान की जाएगी।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का लक्ष्य साधने की दृढ़ इच्छा रखने वाले युवा महानुभाव अपना विस्तृत आवेदन पत्र- विश्व में आर्यसमाज के प्रचार की आवश्यकता और उनकी महान इच्छा, पारिवारिक स्थिति एवं परिचय, भाषा ज्ञान, कम्प्यूटर ज्ञान, शैक्षिक योग्यता, पासपोर्ट नं., मोबाईल एवं ईमेल के साथ तत्काल रूप से **'संयोजक, महाशय धर्मपाल सार्वदेशिक धर्म प्रचार समिति'** के नाम - **'15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001'** के पते पर भेजें अथवा **aryasabha@yahoo.com** पर ईमेल करें।

- संयोजक, महाशय धर्मपाल
सार्वदेशिक धर्म प्रचार समिति

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

धर्मनिरपेक्षता सिर्फ हिन्दुओं के लिए ही क्यों?

..क्या कोई एक कथित धर्मनिरपेक्ष नेता बता सकता है कि कश्मीर में अपनी जमीन से जबरन खदेड़े गए कश्मीरी पंडितों का क्या हुआ? जब जिहाद के नाम पर उन्हें मारा जा रहा था, तब कहाँ थी धर्मनिरपेक्षता? सच्चाई यह है कि कई वर्ष पहले जब ओवेसी बंधुओं का हिन्दुओं को खत्म करने वाला बयान आया था, तब से ही पूरे देश में उनके समर्थक बढ़ रहे हैं। ये सब बातें किस तरफ इशारा कर रहीं हैं? लेकिन हमें क्या, ...

जब ये खबर पढ़ी कि बागपत के बाबू खान को कांवड़ लाने की सजा मिल रही है। वह हरिद्वार से कांवड़ लाया था लेकिन कुछ मुस्लिमों युवाओं को रास नहीं आया और अपने मजहब का हवाला देते हुए उसे पीट डाला गया। कहा, जा अब मंदिर में ही घंटा बजा और कीर्तन कर। इसके बाद बाबूखान ने उनसे नमाज अदा करने देने की मनुहार भी लगाई लेकिन सब व्यर्थ रहा। कट्टर पंथियों ने धमकी दी कि जहां चाहे शिकायत कर ले लेकिन तुझे मस्जिद में नहीं घुसने दिया जाएगा। कल तक हिन्दू-मुस्लिम एकता के गवाह बने बाबू खान को अपने ही समाज के लोगों द्वारा की जा रही उपेक्षा का शिकार होना पड़ रहा है।

इसके बाद 15 अगस्त को देश के स्वतंत्रता दिवस के दिन उत्तर प्रदेश में राष्ट्रगान को लेकर एक मदरसे के मौलवी का मजहब खतरे में आ गया। उसने वहां तिरंगा फहराने के बाद राष्ट्रगान गाने से मना करते हुए कहा कि यह इस्लाम के खिलाफ है। शायद अब बात-बात पर धर्मनिरपेक्षता और गंगा-जमुनी तहजीब का हवाला देने वाले लोगों की आँखों से सेकुलरता का पर्दा हटे कि जब हजारों लाखों हिन्दुओं के द्वारा कब्र, मजार या दरगाह पूजने से धार्मिक एकता बढ़ती है तो एक बाबू खां के कांवड़ ले आने से मजहब को खतरा क्यों हो जाता है? मजारों पर हिन्दू-मुस्लिम एकता का प्रतीक कहकर हिन्दुओं से चादर चढ़ाते दिखाया जाता है। किन्तु एक भी मंदिर में मुसलमानों से पूजा करवाकर हिन्दु-मुस्लिम एकता का उदाहरण क्यों नहीं पेश कराते? क्या धर्मनिरपेक्षता सिर्फ हिन्दुओं का त्यौहार है?

हम सभी जानते हैं कि हम क्या सोचते हैं इसका मतलब है, लेकिन क्या विचार वास्तव में इतना आसान है और धर्म निरपेक्षता का लक्ष्य क्या हमारे लिए अच्छा है? यहाँ एक बात समझ लेनी जरूरी होगी कि दरअसल, भारतीय गणतंत्र के मूल में ही धर्मनिरपेक्षता नहीं थी। यहां यह मान लेने में कोई संदेह नहीं होना चाहिए कि भारतीय राष्ट्रवाद का चरित्र मौलिक रूप से धर्मनिरपेक्ष कभी नहीं रहा। हां, उस पर 'धर्मनिरपेक्षता' की परत अवश्य चढ़ा दी गयी लेकिन इसमें कोई राष्ट्रीय एकता का सिद्धांत नहीं था यह केवल वोट लेने की राजनीति तक सीमित रहा।

इस कारण राजनेताओं की राजनीति खण्ड-खण्ड होकर लूटमार पर आधारित हो गई। बड़े-बड़े घोटालों और भीषण नव साम्राज्यवादी लूट ने देश को जब खोखला कर दिया तो उनका राजनीतिक प्रभाव भी शून्य हो गया। तब यह लोग धर्मनिरपेक्षता के सिद्धांत घड़कर गोल जालीदार टोपी पहनकर राजनीति करते नजर आने लगे।

क्या कोई एक कथित धर्मनिरपेक्ष नेता बता सकता है कि कश्मीर में अपनी जमीन से जबरन खदेड़े गए कश्मीरी पंडितों का क्या हुआ? जब जिहाद के नाम पर उन्हें मारा जा रहा था, तब कहाँ थी धर्म निरपेक्षता? सच्चाई यह है कि कई वर्ष पहले जब ओवेसी बंधुओं का हिन्दुओं को खत्म करने वाला बयान आया था, तब से ही पूरे देश में उनके समर्थक बढ़ रहे हैं। ये सब बातें किस तरफ इशारा कर रहीं हैं? लेकिन हमें क्या, हम तो शुतुरमुर्ग बन गए हैं और उसी की तरह हमने अपना सिर धर्मनिरपेक्षता की रेत में गाड़ लिया है, लेकिन आँखों को बंद कर लेने से मुसीबत खत्म नहीं होती। जब विश्वरूपंम का विरोध करने वालों के लिए मुस्लिम संगठन व मुस्लिम समुदाय जैसे शब्द उपयोग किये जाते हैं तब धर्मनिरपेक्षता बनी रहती है लेकिन जब हिन्दू रानी पद्मावती फिल्म का विरोध करते हैं तब उन्हें कट्टरपंथी हिन्दू शब्द पकड़ा दिए जाते हैं जरा सोचिये यह सब करने वाली मीडिया खुद कितनी धर्म निरपेक्ष है इसका सहज अंदाजा लगाया जा सकता है।

हिन्दू-मुस्लिम एकता की बात क्यों की जाती है जवाहर लाल नेहरू, महात्मा गांधी, इन्दिरा गांधी, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद आदि की समाधि पर उनकी पुण्यतिथि को गीता, कुरान आदि सभी धर्मो की पुस्तकों का पाठ होता है। लेकिन जाकिर हुसैन, मौलाना आजाद, फखरुद्दीन अली अहमद आदि मुसलिम नेताओं की मजार पर केवल कुरान का पाठ होता है। वहाँ यह नेता गीता का पाठ क्यों नहीं करवाते? क्या धर्मनिरपेक्षता और दूसरे धर्मो की इज्जत करने का ठेका केवल हिन्दुओं ने ही ले रखा है?

पिछले वर्ष दिसम्बर, 2017 को, एक मुस्लिम प्रवासी मजदूर मोहम्मद अफ्राजुल को राजसमंद में शंभू लाल रेंगर नाम के आदमी ने हत्या कर दी थी उस समय वाशिंगटन स्थित एक बलूच के कार्यकर्ता अहमार मस्तिखन जो काफी समय से हिन्दू धर्म का समर्थक रहा उसने लिखा आज मेरे सिर से हिन्दू धर्म के एक मानवतावादी होने का विश्वास उठ गया। यह बात एक मुस्लिम कह रहा था एक मानसिक रोगी द्वारा की गई हत्या से उसका विश्वास डोल गया लेकिन अमेरिका में हुए 26/11 और भारत ने हुए ताज होटल पर हमले और इस्लामिक स्टेट द्वारा हजारों यजीदी समुदाय के लोगों की हत्या और रेप के बाद उसका विश्वास कभी इस्लाम से नहीं उठा बस यही वह सवाल हैं जो धर्मनिरपेक्षता को खंगाल डालते हैं।

तसलीमा नसरीन भी धर्मनिरपेक्ष है और अरुधंति राय भी। पर कमाल देखिये! अरुंधती को अलगावादी नेताओं और कश्मीर का दर्द तो दिखता है पर बांग्लादेश में हिन्दुओं की चीख नहीं सुनती। दरअसल ये बहरापन नहीं बल्कि एक विचारधारा है, जिसे यहाँ धर्मनिरपेक्षता और अन्य देशों में पागलपन कहा जाता है। अमेरिकी राष्ट्रपति बनने से पहले ट्रम्प ने अपने एक अहम नीतिगत भाषण में कहा था कि अगर मैं राष्ट्रपति बनता हूं तो मैं राष्ट्र निर्माण के युग को बहुत तेजी से निर्णायक अंत की ओर ले जाऊंगा। हमारा नया दृष्टिकोण निश्चित तौर पर कट्टरपंथी इस्लाम को रोकने वाला होगा। पूरे भाषण में, कुछ मुझे परेशान करता रहा और वह ये था कि मैं एक भी ऐसे भारतीय नेता के बारे में नहीं सोच सकता जो ऐसा भाषण दे सके। शायद तभी आज भारतीय राजनीतिक परिप्रेक्ष्य आज एक रेगिस्तान बन गया है हमें एक साफ राजनीतिक प्रवचन की आवश्यकता है जिसमें वास्तविक राजनीतिक और धार्मिक समस्याओं पर चर्चा की जा सके लेकिन ऐसा नहीं होगा और हम एकतरफा धर्म निरपेक्षता की मछली पकड़ते रहेंगे!

- राजीव चौधरी

क्रान्तिकारियों की कथा

अमर शहीद राजगुरु

गतांक से आगे -

'काकोरी केस' के बाद आज़ाद सीधे पहुंचे बनारस। कुछ दिन वहां रहे। फिर एक दिन वहीं से अचानक ग़ायब होकर झांसी में फ़रारी-जीवन व्यतीत करने लगे। उनके बचे रहने के दो विशेष कारण थे। पहला यह कि किसी मुख़बिर या गुप्तचर अधिकारी को उनका आवास-स्थान ज्ञात न था। बनारस से बिना किसी को संकेत दिये ही अचानक खिसक गये थे। और दूसरा, झांसी में सी. आई. डी. के ग्रुप अफसर की नियुक्ति नहीं थी। केवल 'डिस्ट्रिक्ट इंटेलिजेन्स स्टाफ़' में एक सब-इंस्पेटकर, दो हेड कांस्टेबिल और छह कांस्टेबिल तैनात थे। एक हेड कांस्टेबिल और दो कांस्टेबिल पूरे शहर की राजनीतिक गतिविधियों पर नज़र रखते थे और इतना ही स्टाफ़ झांसी रेलवे स्टेशन पर संदिग्ध व्यक्तियों एवं क्रांतिकारियों पर निगरानी रखने के लिए नियुक्त था। एक कांस्टेबिल दफ़्तर का काम देखता था। और एक सब-इंस्पेक्टर के घर का। इन्हें इतनी फ़ुरसत ही कहां थी कि किसी अतिरिक्त कार्य में माथापच्ची करते।

हज़रतगंज लखनऊ में, जहां इस समय जनरल पोस्ट आफ़िस की शानदार इमारत खड़ी है, वहीं पहले रिंग थिएटर था। उसी स्थान पर इस मुक़द्दमे की सुनवाई एक विशेष अदालत में मिस्टर जस्टिस हेमिल्टन के समक्ष हुई थी। इंडियन पेनल कोड की दफ़ा 121 ए (मलिका-ए-मुअज़्मा अर्थात् राजा के विरुद्ध युद्ध की घोषणा करना), 120 (राजनीतिक षड्यन्त्र), 302 (क़त्ल) तथा 396 (क़त्ल-डकैती) के अन्तर्गत 'काकोरी कांस्प्रेसी केस' के मुलजिमान पर मुक़द्दमा चलाया गया था।

पं. रामप्रसाद 'बिस्मिल' को टीका राम ने इन्हीं के मकान पर शाहजहांपुर में गिरफ़्तार किया था- प्रात: बाहर बरामदे में कुल्ला-दातून करते समय। उपहार स्वरूप टीकाराम को इंस्पेक्टर और डिप्टी सुपरिण्टेण्डेण्ट आफ़ पुलिस बनाकर राय बहादुर तथा 'मेम्बर आफ़ ब्रिटिश एम्पायर' (एम.बी.ई;) के आला खिताबों से विभूषित किया गया। स्वतन्त्रता के बाद कांग्रेस सरकार ने पहले उन्हें पुलिस अधीक्षक ओर फिर 'असिस्टैण्ट इंस्पेक्टर जनरल आफ़ पुलिस' (ए.आई.जी.) बनाया। अशफ़ाक़उल्ला, डॉ. वारसी (इन्हें एक मुखबिर ने दिल्ली में पकड़वाया), राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी, रोशनसिंह, शचीन्द्र नाथ बख्शी (इन्हें एक मुखबिर ने भागलपुर में गिरफ़्तार कराया), मन्मथनाथ गुप्त, केशव चक्रवर्ती, मुरारीलाल, मुकुन्दी लाल गुप्त, बनवारीलाल (मुख़बिर) आदि पर लगभग डेढ़ वर्ष तक मुक़द्दमा चला। अकेले इस मामले में ब्रिटिश सरकार ने तक़रीबन ग्यारह लाख रुपये फूंके।

- क्रमश:

- धर्मेन्द्र गौड़ : साभार : क्रान्तिकारी आन्दोलन के अधखुले पन्ने

क्रान्तिकारी आन्दोलन के अधखुले पन्ने : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्त करने के लिए मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन -2018 दिल्ली में

वानप्रस्थ और संन्यास-दीक्षा

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली-2018 में इस बार भी गत सम्मेलन की भांति वानप्रस्थ और संन्यास की दीक्षा के लिए नि:शुल्क वानप्रस्थ और संन्यास की दीक्षा का भव्य कार्यक्रम आयोजित होगा। जो आर्य महानुभाव इस अवसर पर आर्यजगत् के मूर्धन्य संन्यसी वैदिक विद्वानों से वानप्रस्थ अथवा संन्यास की दीक्षा लेना चाहते हों, इस कार्यक्रम में सादर आमन्त्रित हैं।

दीक्षा के इच्छुक महानुभाव कृपया अपना विवरण '**संयोजक, यज्ञ समिति**' के नाम **सम्मेलन कार्यालय - 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001** पर अथवा aryasabha@yahoo.com पर भेजें ताकि उनके संस्कार की समस्त व्यवस्था बनाई जा सके।

- महासम्मेलन संयोजक

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन
25, 26, 27, 28 अक्टूबर 2018
सम्मेलन स्थल :- स्वर्ण जयंती पार्क, रोहिणी, सैक्टर-10, दिल्ली-85
विश्व शान्ति यज्ञ, योग व तपोनिष्ठ संन्यासियों, वैदिक विद्वानों द्वारा सत्संग
तथा प्रवचन का लाभ उठाने हेतु लाखों की संख्या में भाग लेकर कार्यक्रम को सफल बनायें।
सम्मेलन कार्यालय : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1 दूरभाष : 9540029044
E-mail : aryasabha@yahoo.com, Website : www.aryamahasammelan.org, www.thearyasamaj.org
YouTube : thearyasamaj 9540045898

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली-2018 की तैयारियां

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा की बैठक दयानन्द मठ रोहतक में सम्पन्न

सभी जिलों के वेद प्रचार मंडलों एवं आर्यसमाजों के अधिकारी, कार्यकर्ता एवं सदस्य रहे उपस्थित

मौन रखकर पूर्व प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी को किया गया स्मरण : दी श्रद्धांजलि

सम्मेलन में आने वाला हर व्यक्ति हमारे परिवार का सदस्य : उनका आतिथ्य हमारा कर्त्तव्य - मा. रामपाल

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2018 की तैयारी के चलते हरियाणा प्रतिनिधि सभा, दयानन्द मठ, रोहतक के अन्तर्गत हरियाणा के समस्त जिलों में कार्यरत वेद प्रचार मंडलों समस्त अधिकारियों, आर्यसमाजों एवं आर्यकार्यकर्ताओं की बैठक रविवार 19 अगस्त को दयानन्द मठ रोहतक में सम्पन्न हुई। बैठक में मुख्य मुद्दा अन्तर्राष्टीय आर्य महासम्मेलन की तैयारियां थी। बैठक प्रारम्भ होने पर सर्वप्रथम भारत के पूर्व प्रधानमन्त्री स्व. अटल बिहारी वाजपेयी जी के निधन पर शोक प्रकट किया गया तथा आर्यसमाज की ओर से दो मिनट के मौन के साथ श्रद्धांलि अर्पित की गई।

हरियाणा सभा के प्रधान मास्टर रामपाल जी उपस्थित समस्त सदस्यों को सम्बोधित करते हुए कहा कि दिल्ली का यह अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन हमारा अपना सम्मेलन है। इसमें भारत के अन्य राज्यों तथा विदेशों से जितने भी प्रतिनिधि पधारेंगे वे हमारे अपने परिवार के सदस्य ही होंगे। उनका आतिथ्य, सेवा, सुश्रुषा करना हमारा कर्त्तव्य है। सार्वदेशिक सभा ने महासम्मेलन का जो कार्य आरम्भ किया है, उसमें हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा तन-मन-धन से सहयोग करेगी। इस अवसर पर हरियाणा सभा की ओर से महासम्मेलन की व्यवस्थाओं में सहयोग हेतु 20 लाख रुपये की राशि का चैक भी प्रदान किया।

इस अवसर पर महासम्मेलन के संयोजक एवं दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, सार्वदशिक सभा के उपमन्त्री एवं दिल्ली सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के महामंत्री श्री सतीश चड्ढा जी ने भी उपस्थित कार्यकर्ताओं एवं आर्यसमाज के सदस्यों को सम्बोधित किया।

मंच संचालन हरियाणा सभा के मन्त्री श्री उमेश शर्मा जी ने किया। इस अवसर पर समस्त हरियाणा प्रदेश की विभिन्न आर्यसमाजों के अधिकारियों, कार्यकर्ताओं, संन्यासी महानुभावों, गुरुकुलों के आचार्यों तथा मातृशक्ति के साथ प्रमुख रूप से श्री कन्हैया लाल आर्य, आचार्य सर्वमित्र, डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी, स्वामी धर्मदेव जी सहित सैंकड़ो आर्य बन्धओं ने भाग लिया तथा आर्य महासम्मेलन में उत्साह के साथ आने का संकल्प किया।

भारतीय स्वाधीनता की 72वीं वर्षगांठ पर भव्य शोभा यात्रा एवं तिरंगा यात्रा सम्पन्न

आजादी के तरानों के साथ-साथ चला अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के लिए जन सम्पर्क अभियान

पश्चिमी दिल्ली वेद प्रचार मंडल ने निकाली अंधविश्वास पाखण्ड हटाओ यात्रा एवं उत्तरी पश्चिमी दिल्ली वेद प्रचार मंडल ने निकाली तिरंगा यात्रा

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा घोषित 'अंधविश्वास निरोधक वर्ष - 2018' के अनुसार पश्चिमी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के तत्त्वावधान में 15 अगस्त 2018 को एक विशाल व भव्य शोभायात्रा का आयोजन किया गया जिसके केन्द्र बिन्दु में इसी भावना को रखा गया। शोभा यात्रा में जहां एक ओर वेद मन्त्रों का गुजन था वहीं दूसरी ओर स्वाधीनता दिवस के उपलक्ष्य में भारत माता की जय का जय घोष था। जहां एक ओर पाखण्ड, अंध विश्वास को छोड़ने के संकल्प वाक्य थे तो वहीं वेद एवं वैदिक सिद्धान्तों को जीवन में अपनाने की मार्मिक अपील थी। शोभायात्रा का शुभारम्भ आर्य समाज पूर्वी पंजाबी बाग से न्यू मोती नगर, कर्मपुरा, मोती नगर, सुदर्शन पार्क, कीर्ति नगर, रमेश नगर, श्रद्धापुरी से होते हुए मानसरोवर गार्डन पर यात्रा सम्पन्न हुई। जिसमें लगभग 800 महानुभावों, मातृशक्ति, आर्यवीर, आर्यवीरांगनाएं व गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने बड़े उत्साह और उमंग के साथ भाग लिया। शोभायात्रा में सर्वप्रथम यज्ञ की झांकी के साथ लगभग 50 स्कूटर व मोटरसाइकल, ई-रिक्शा बसों पर आर्यजन शोभा बढ़ा रहे थे। उपरोक्त सभी समाजों ने अपने भवन के आगे आर्यजनों के स्वागत सम्मान व प्रसाद एवं जलपान की व्यवस्था की हुई थी। इस शोभायात्रा का नेतृत्व मण्डल प्रधान श्री बलदेव सचदेवा व महामंत्री श्री विरेन्द्र सरदाना का सानिद्धय दिल्ली सभा के श्री धर्मपाल आर्य प्रधान, श्री ओम प्रकाश आर्य व श्री

- शेष पृष्ठ 5 पर

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली में सहभागिता हेतु आर्य उपप्रतिनिधि सभा गढवाल द्वारा प्रचार-प्रसार अभियान का शुभारम्भ

विगत माह से जारी भारी बरसात के बाद आर्य उपप्रतिनिधि सभा गढवाल (उत्तराखण्ड) द्वारा 19 अगस्त 2018 से अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली में गढवाल मण्डल से अधिक से अधिकारी संख्या में सहभागिता हेतु आर्यसमाज ध्रुवपुर, कोटद्वार से प्रचार-प्रसार अभियान का शुभारम्भ किया गया। प्रचार-प्रसार अभियान गढवाल मण्डल के सदूरवर्ती ग्रामीण स्थलों में जन-जीवन सामान्य होते ही बड़े जोर शोर से 20 अक्टूबर तक किया जायेगा। 24 अक्टूबर को सम्पूर्ण गढवाल मण्डल से आने वाले धर्म प्रेमी जन कोटद्वार में एकत्र होकर रात रेलगाड़ी से आर्य महासम्मेलन दिल्ली के लिये प्रस्थान करेंगे। आर्य उपप्रतिनिधि सभा गढवाल उत्तराखण्ड को आर्य महासम्मेलन दिल्ली समिति द्वारा मुचित मात्रा में प्रचार सामग्री प्राप्त हो चुकी है।

- मनमोहन आर्य,मंत्री
आर्य उपप्रतिनिधि सभा गढवाल

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2018

नवीनतम सूचनाओं व जानकारियों हेतु जुड़ें व्हाट्सएप्प पर और साझा करें विचार

ठहरने के लिए क्या आप 'होटल' चाहते हैं

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में आप की भागीदारी महत्त्वपूर्ण है। आप सभी का सहर्ष स्वागत है। आप इस अवसर पर अधिकाधिक संख्या में आएँ और अन्यों को इसके लिए प्रेरित करें। इस अवसर पर यदि आप ठहरने के लिए होटल में आवास सुविधा चाहते हैं तो संयोजक समिति द्वारा कुछ होटलों में सशुल्क आवास व्यवस्था उपलब्ध कराई जा रही है। सामान्य होटल करोल बाग क्षेत्र में मैट्रो के निकट, रोहिणी क्षेत्र में 2 स्टार ओयो रुम सम्मेलन स्थल से 2 किमी क्षेत्र में तथा 3 स्टार होटल सम्मेलन स्थल से 3-4 किमी की दूरी पर हैं। प्रत्येक होटल के एक कमरे में दो व्यक्तियों के ठहरने की व्यवस्था है अटैच बाथरूम। होटल शुल्क (सभी करों सहित) इस प्रकार है-

सामान्य होटल : 1500/- रुपये प्रति रात्रि दो व्यक्तियों के लिए
2 स्टार ओयो रुम : 2500/- रुपये प्रति रात्रि दो व्यक्तियों के लिए
3 स्टार (विद ब्रेक फास्ट) : 3500/- रुपये प्रति रात्रि दो व्यक्तियों के लिए

यदि आप कमरे में तीसरे बैड की व्यवस्था चाहते हैं तो अतिरिक्त शुल्क पर बैड उपलब्ध हो सकेंगे। उसके लिए आपको स्वयं होटल में बात कर लें। अनुमानित रूप से तीसरे बैड के लिए सामान्य होटल में 300/-, 2स्टार में 500/- तथा 3 स्टार में 800/- रुपये में देय होंगे। अतिरिक्त बैड की ये दरें अनुमानित हैं। इसके लिए आप स्वयं अपने आबंटित होटल में पहुंचकर बात करें।

कमरे पूर्णत: वातानुकूलित और आवश्यक सुविधाओं से युक्त हैं। यदि सुविधा का लाभ उठाना चाहते है तो देय राशि का बैंक ड्राफ्ट **"दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा - महासम्मेलन-2018"** के नाम बनाकर अपने नाम,पता एवं दूरभाष सहित पूर्ण विवरण पत्र द्वारा सम्मेलन कार्यालय को भेजें। *- संयोजक, आवास समिति*

प्रथम पृष्ठ का शेष

शिव कुमार मदान उपप्रधान, श्री विनय आर्य महामंत्री कर रहे थे। इस शोभायात्रा में मण्डल की अन्य समाजों के अधिकारी श्री वेद प्रकाश जी, डॉ. मुकेश आर्य, श्री रवि चड्ढा, श्री विक्रम नरूला, श्री हरीश कालरा, ओम प्रकाश घई, श्री सुखबीर सिंह आर्य, श्री सुरेश टण्डन, श्री राकेश आर्य, श्री प्रवीण वधवा, श्री राजेन्द्र पाल आर्य, श्री नरेन्द्र सुमन, श्री महेश भयाना, श्री अशोक गुप्ता, श्री धर्मवीर, श्री रामेश्वर गुप्ता, श्री विजय कपूर, श्री रमेश चन्द्र आर्य, श्री कर्मजोगी मिगलानी, श्री धर्मेन्द्र धवन, श्री नरेश विज, श्री अशोक खुराना, श्रीमती प्रकाश कथूरिया, श्रीमती सुषमा शर्मा, श्रीमती कविता आर्य, श्रीमती उमा वधवा, श्रीमती अनीता वधवा इत्यादि ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। पूर्व विधायक सुभाष सचदेवा व पूर्व निगम पार्षद यशपाल आर्य एवं भारत भूषण मदान ने शोभायात्रा का हर्षोल्लास के साथ स्वागत करते हुए भाग लिया।

-सतीश चड्डा

स्वाधीनता दिवस पर भव्य तिरंगा यात्रा सम्पन्न

"एक समय था जब देश की आजादी के लिए युवाओं ने हंसते-हंसते अपने प्राणों की आहुति दे दी थी, लेकिन आज का युवा देश प्रेम से अपना मुंह मोड़ता जा रहा है जिस कारण राष्ट्र विरोधी शक्तियां अपना मुंह फैलाती जा रही हैं। राष्ट्रीय एकता और संगठन के लिए युवा शक्ति को आगे आना ही होगा तभी देश व समाज की प्रगति सम्भव है।" ये उद्गार आचार्य सुखदेव तपस्वी ने स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर 15 अगस्त को स्वर्ण जयन्ती पार्क, रोहिणी दिल्ली में आर्य समाज की तिरंगा यात्रा के प्रारम्भिक दौर में व्यक्त किये। यात्रा का आयोजन उ.पश्चिमी दिल्ली वेद प्रचार मंडल के अन्तर्गत क्षेत्र की समस्त आर्यसमाजों द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य व आर्य समाज रोहिणी सैक्टर-7 के प्रधान श्री नरेश पाल आर्य ने भी प्रेरक विचार रखे।

सचिव श्री संजीव गर्ग ने बताया कि अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2018 व 71वें स्वतन्त्रता दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित सैक्टर-7 से "विशाल तिरंगा यात्रा" प्रारम्भ होकर डिस्ट्रिक पार्क रजापुर, सैक्टर-9, सैक्टर-13 होते हुए स्वर्ण जयन्ती पार्क में सम्पन्न हुई।

जिसमें सैकड़ों, आर्य वीरों, नर-नारियों ने "युवा जागो-देश बचाओ," "आतंकवाद मिटाओ-देश प्रेम जगाओ" नारे लगाये।

उत्तरी पश्चिमी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के प्रधान श्री सुरेन्द्र गुप्ता के अनुसार रानी बाग, पंजाबी बाग क्षेत्र की आर्य समाजों ने भी आजादी पर्व पर जन चेतना-यात्रा निकालकर सामाजिक जागृति को दर्शाया।

- चन्द्रमोहन आर्य, पत्रकार

Veda Prarthana - II
Regveda - 17

समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम्।
आस्मिन् हव्या जुहोतन।।

– *यजुर्वेद 3/1*

Samidhagnim duvasyata
ghrtairbod ha yatatithim.
Asmin havya juhotan

- *Yajur Veda 3:1*

Yajna Agnihotra/Havan should be Performed Properly for Full Benefit

- Acharya Gyaneshwarya

In the Vedas and Vedic scriptures a lot of imoportance has been given to Agni i.e. energy/ fire and on its utilization in a number of ways. These include energy in the form of fire for cooking food, usefulness of other types of energy in building homes, running factories, running ground vehicles or boats, airplanes, and manufacturoing and running a variety of other instruments. In addition, there is discussion on the use of fire to do agnihotra/havan described to reduce and control environmental pollution as discussed in the following paragraphs in detail.

Agnihotra/havan is a scientific physical-chemical process where an inverted pyramid shaped metallic vessel called havankund is utitlized to burn a fire of special woods, ghee, herbs and incense at a high temperature to purify the environment. The fire temperature in the vessel is several hundred degrees Farnheight higher than in open wood fire.

In the havankund kindling obtained from milky sap containing mango or ficus tree are burnt. These woods catch fire quickly, burn fast and produce higher temperature. Their woods burn completely and produce minimal carbon monoxide. To further increase their burning ability, small amount of ghee obtained from cow's milk is slowly poured on the burning kindling with a spoon. Ghee thus burnt produces special gasses, which clean polluted air and its water vapor both near the earth's surface level as well as high in the atmosphere.

As the havankund kindling fire enhanced/stoked by ghee becomes roaring, then oblations of samigri-a mixture made of herbs and incense as described below is sprinkled over the fire. The samigri is made by mixing four different types of products in special combinations based upon the season. These include special herbs, which prevent disease; fragrant herbs or dried flowers like saffron, kasturi; energy producing substances like ghee, dried coconut; and sweet substances like jaggery, dates, raisins. All four are mixed and pounded into a coarse samigri powder. About 40 to 50 select herbs, grains, dried leaves, flowers, roots or fruit are utilized to make proper samigri. When such made samigri is sprinkled over fast burning kindling they produce special fragrant gasses, which in Vedic scriptures are called bheshaj-penetrating gasses which can rise high and permeate in the atmosphere to cleanse the air and water vapors as an antipollutant. Subsequently, the rains that fall are made of good clean water instead of polluted rain like acid-rain, or contaminated with chemicals. Thus, the whole eco system has less pollution.

Once atmospheric air and water are clean, the earth also gradually becomes cleansed and less chemically polluted. Thereafter, foods grown in the soil such as grains, vegetables and fruits, herbs, herbal medicines all beeome purer, devoid of harmful chemical contamination. Once various foods we eat are pure, our physical body and its components like blood, muscles, bones, marrow, and veerya (seemantra #16 page#) become purer and less likely to get disease. Moreover, as our body has less harmful chemical contamination, it positively affects our mind and intellect and makes them more virtuous. Our soul then has good thoughts, our words are honest and true, and we do virtuous deeds. On the other hand, when pollution prevails our mind thinks wrong thoughts, our words and deeds also become wrong and impure.

In Vedic scriptures. based on all the above reasons there is recommendation to perform agnihotra -havan every morning and evening. The two times a day havan takes only few rupees (cents) and 10&15 minuts per day. The benefit of this small effort requiring a limited amount of time and resources, however, is the purification of thousands of cubic meters of air. This benefit is not only for hunan beings but is extended to all other living things such as animals, birds, insects and plants.

In the ancient times when agnihotra was performed in most homes every day, people were healthier, stronger, had more wisdom, and lived longer. Since the custom of daily agnihotra has stopped, there has been downfall in person's physical and mental health as well as spiritual decline. There has been an increase in environmental pollution due to accumulation of harmful gasses as well as it has resulting in global warming with potential for further destruction of earth resources.

This Veda mantra instructs human beings to properly establish agin in havan kund and perform the agnihotra with care and devotion as one would honor and respect a dear guest or friend. With the fragrant gasses produced in the process purify the environment as well as destroy a variety of harmful organisms in your house and surrounding neighborhood, village and towns. Daily agnihotra is considered a superior highly recommended activity because it requires limited resources, effort and time.

In recent times even in Western countries such as Russia, Netherland, Chile and USA many scientists have mentioned/described benefits of gasses produced by burning special herbs like guggul, raisins, barley, rice, Jaggery as done in agnihotra. There is an increasing confirmation that the ancient Indian's method of environmental purification by agnihotra is indeed valid and beneficial. Therefore, we should take the message of this Veda mantra to heart and perform daily agnihotra, not only to purfy environment but also to purify our minds and spirits to become virtuous. Dear God, our prayer to You is to help us re-establish the tradition of daily agnihotra for our, our family's and our surrounding environment's benefit.

To Be Continue....

प्रेरक प्रसंग

क्यों रूठ गए दमयन्ती पति

प्रिं. मेलारामजी 'बर्क' ने एक बार मुझे निम्न घटना सुनाई। महाकवि नाथुराम 'शंकर' जी कहीं भोजन के उपरान्त नल पर हाथ धोने लगे। नल की टूटी मरोड़ी परन्तु जल न निकला। जल समाप्त हो चुका था। महाकवि इकदम बोले–

''क्यों रूठ गये दमयन्ती–पति?''

अद्भुत प्रतिभावाले दार्शनिक विद्वान् कवि का यह समयोचित पद सुनकर उपस्थित जन खिलखिला उठे।

– ***प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु***

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

आओ ! संस्कृत सीखें

संस्कृत वाक्य अभ्यासः (65)
दैनिक बातचीत की सामान्य जानकारी

गतांक से आगे....

सुन्दरम्–अच्छा..पुनः –फिर....वार्ताः .. बात..कुर्वन्ति – करेंगे। शुभरात्री ।

सुन्दरम् पुनः वार्ताः कुर्वन्ति – अच्छा फिर बात करेंगे। शुभरात्रिः शुभरात्री।

अस्तु –ठीक है.... गम्यताम् –जाइये

अहम् –मैं....अतिप्रसनः –बहुत प्रसन्न हूं... राजभ्राता –राज भाई।

अहम् अतिप्रसन्नः राजभ्राता – मैं बहुत प्रसन्न हूं राजभाई ।

अहो–अरे...बहुरुचिकरं विलक्षणं संस्कृतसंभाषणम् .... बहुत रुचिकर विलक्षण संस्कृत वार्तालाप ।

सर्वेषां–आप सबका.... स्वागतम – स्वागत है।

सर्वेषां स्वागतम – आप सबका स्वागत है।

संस्कृतं अत्यंतं सरल भाषा संस्कृत बहुत ही सरल भाषा है।

संस्कृतेन संभाषणम –संस्कृत सुनना. ...इतोपी सरलम– इससे भी सरल है।

संस्कृतेन संभाषणम इतोपी सरलम संस्कृत सुनना इससे भी सरल है।

भवतः नाम किम? आपका नाम क्या है? (भवतः – पुरुष के लिए)

भवत्याः नाम किम? आपका नाम क्या है? (भवत्याः – महिला के लिए)

मम नाम इन्द्रजीतः – मेरा नाम इन्द्रजीत है।

उत्तीष्ठ्तु खड़े हो, उत्तमं उत्तम, आगच्छतु आइये ,

– ***आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय,*** मो. 9899875130

शोक समाचार

श्रीमती शारदा आर्या जी को पुत्रशोक

दिल्ली सभा के भूतपूर्व प्रधान ब्र. राज सिंह आर्य के भांजे एवं आर्य वीरांगना दल दिल्ली प्रदेश की संचालिका श्रीमती शारदा आर्य के सुपुत्र श्री विवेक आर्य जी का 20 अगस्त 2018 मात्र 38 वर्ष की अल्पायु में कैंसर से निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार निगम बोध घाट पर पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। इस अवसर पर सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, महामन्त्री श्री विनय आर्य जी के साथ आर्य केन्द्रीय सभा, आर्य वीर दल, वीरांगना दल तथा अनेक आर्यसमाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 23 अगस्त को दोपहर 2:30 बजे से आर्यसमाज बिडला लाइन्स दिल्ली में सम्पन्न हुई।

श्री मदन लाल खुराना जी को पुत्र शोक

दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री, राजस्थान के पूर्व राज्यपाल एवं आर्य समाज के सहयोगी श्री मदनलाल खुराना के ज्येष्ठ सपुत्र श्री विमल खुराना जी का 50 वर्ष की आयु में 17 अगस्त को निधन हो गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 20 अगस्त सम्पन्न हुई, जिसमें दिल्ली सभा की ओर से शोकपत्र भेज गए।

आचार्या लक्ष्मी भारती का निधन

आर्ष कन्या गुरुकुल सजूमा, जिला कैथल, हरियाणा की आचार्या लक्ष्मी भारती जी का दिनांक 18 अगस्त को रात्रि 11:30 बजे हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ पंजाबी बाग शमशान घाट 19 अगस्त को पर किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 22 अगस्त को आर्यसमाज रोहिणी सै. 7 में सम्पन्न हुई जिसमें सभा अधिकारियों के साथ–साथ निकटवर्ती आर्यसमाजों के अधिकारी एवं सदस्यों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक–संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। –सम्पादक

आवास व्यवस्था हेतु कृपया ध्यान दें

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली-2018 के अवसर पर यदि आप सम्मेलन स्थल मैदान में ही बनें आवासों में ठहरने की व्यवस्था चाहते हैं तो कृपया ध्यान दें -

1. सम्मेलन के दिनों में रात्रि का मौसम हल्की ठंड वाला होगा। अत: अपने ओढ़ने एवं बिछाने के लिए सामान्य चादर अवश्य साथ लाएं।

2. जो महानुभाव ग्रुप में आ रहे हैं। वे अपने ग्रुप लीडर का नाम, पता, फोन नं. और ग्रुप में आने वाले सदस्यों की सूची बनाकर आवास समिति के नाम सम्मेलन कार्यालय के पते पर भेजें अथवा aryasabha@yahoo.com पर ईमल करें। अपने ईमेल/पत्र पर **"आवास व्यवस्था हेतु"** अवश्य लिखें ताकि आपके लिए आवास एवं ट्रांस्पोर्ट व्यवस्था की जा सके।

जो व्यक्ति एक साथ, एक ही साधन से एक ही समय पर पहुंच रहे हैं, उसे ही ग्रुप कहा जाएगा। अत: यदि आप एक ही संस्था/आर्यसमाज के सदस्य होने पर भी अलग-अलग समय/साधन से आ रहे हैं तो उसके लिए पृथक से ग्रुप लीडर बनाएं और उसी के हिसाब से पधारने वाले सज्जनों की सूची भेजें।

- संयोजक, आवास समिति

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2018, दिल्ली

रेल भाड़े में 50% छूट : अभी से रेलवे आरक्षण कराएं

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2018 दिल्ली में भाग लेने हेतु दिल्ली आने वाले सभी आर्य महानुभावों को भारत सरकार की ओर से रेल भाड़े में 50% की छूट प्रदान की गई है। छूट का लाभ लेने वाले महानुभाव अपनी आर्यसमाज/संस्था के लैटर हैड पर पधारने वाले सदस्यों की सूची नाम-पता-आयु-मो. नं. के साथ बनाकर भेजें। सम्मेलन कार्यालय की ओर से तत्काल रेल भाड़ा छूट फार्म कोरियर/स्पीडपोस्ट द्वारा भिजवा दिए जाएंगे। रेलवे भाड़ा छूट प्राप्त करने हेतु निर्देश -

1. एक व्यक्ति के लिए एक फार्म भरा जाएगा। टिकट आने-जाने की एक साथ होगी।
2. दिल्ली से 300 किमी से अधिक की दूरी वाले महानुभावों को ही इस छूट का लाभ प्राप्त हो सकेगा।
3. जिन महानुभावों - वरिष्ठ नागरिकों/ स्वतन्त्रता सेनानियों/दिव्यांगों को पहले से ही रेलवे द्वारा छूट दी जा रही है उन्हें इस छूट का लाभ नहीं हो सकेगा।
4. छूट केवल दूसरे दर्जे/श्यनयान दर्जे के लिए ही प्राप्त की जा सकेगी।

अधिक जानकारी के लिए **श्री सुरेशचन्द्र गुप्ता जी को 9211333188** पर व्हाट्एप्प करें aryasabha@yahoo.com पर ईमेल करें अथवा महासम्मेलन कार्यालय को लिखें अथवा।- ***संयोजक***

वेद प्रचार सप्ताह एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व

आर्य समाज मन्दिर, शकरपुर, दिल्ली के तत्त्वावधान में दिनांक 30 अगस्त से 1 सितम्बर के बीच वेद प्रचार सप्ताह एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का आयोजन किया जा रहा है। समारोह के अन्तर्गत चतुर्वेद शतक पारायण सामूहिक यज्ञ, भजन, प्रवचन एवं अन्य कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता पं. प्रणव प्रकाश शास्त्री एवं श्री सहदेव सरस जी होंगे।

-मिश्रीलाल गुप्ता, प्रधान

वेद प्रचार सप्ताह व श्रावणी पर्व

आर्य समाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश-1 दिल्ली के तत्त्वावधान में दिनांक 20 से 25 अगस्त 2018 के बीच वेद प्रचार सप्ताह व श्रावणी पर्व का आयोजन किया जा रहा है। कार्यक्रम के अन्तर्गत ऋग्वेद महायज्ञ, भक्ति संगीत एवं वेद कथा का आयोजन किया जाएगा। प्रवक्ता डॉ. रघुवीर वेदालंकार, डॉ. विनय विद्यालंकार जी होंगे। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्रीमती शिखा राय (अध्यक्षा, स्थाई समिति, दक्षिणी दिल्ली नगर निगम) होंगी।

- विजय लखनपाल, प्रधान

सैनिक भाइयों के लिए छात्राओं ने बनाई राखी

बामनिया, "आप हमारे गर्व हो, इस त्यौहार पर अपनी बहनों से दूर हो, हमें ही अपनी बहन मानकर इस राखी को अपनी कलाई पर बांध लेना....आप सरहद पर खड़े हो तो हम यहां त्योहार मना पाते हैं, आपके त्याग को नमन।" इन मार्मिक पंक्तियों के साथ छात्राओं ने अपने सैनिक भाइयों को राखी बनाकर भेजी। आयोजन महाशय धर्मपाल (एमडीएच) दयानंद आर्य विद्या निकेतन में हुआ। हर छात्रा ने राखी के साथ एक चिट्ठी भी लिखकर भेजी। प्राचार्य प्रवीण अत्रे ने कहा कि देश की रक्षा करने वाले सैनिक रक्षाबंधन जैसे त्यौहार पर भी अपने परिवार से दूर रहते हैं और हम भी उनके परिवार का हिस्सा हैं। उनकी सूनी कलाइयों को सजाने और त्यौहार में उनके साथ सहभागी होने के लिए संस्था द्वारा यह प्रयास गत वर्ष से किया जा रहा है।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन - 2018

ध्यान देने योग्य बातें

1. महासम्मेलन में स्वयं तो आएं साथ में अपने परिवार व बच्चों को भी साथ लावें।
2. अपनी संस्थाओं के आर्यवीर/ आर्य वीरांगनाओं विद्यार्थियों को परिवार सहित साथ लावें। अपने इष्ट-मित्रों, सम्बन्धियों को महासम्मेलन में आने के लिए प्रेरित करें।
3. अपने साथ कम से कम सामान लाए। कीमती सामान बिल्कुल न लाएं।
4. ऐसे परिवारों को अवश्य आमंत्रित करें जो पहले कभी आर्य समाजी थे पर किन्हीं कारणों वश अब आर्य समाज से सम्बन्ध नहीं रख पा रहे हों।

सार्वदेशिक सभा एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित
अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन - 2018
25-28 अक्तूबर, 2018 : स्वर्ण जयन्ती पार्क, सै.-10, रोहिणी, दिल्ली

मुख्य पंजीकरण फार्म

पंजीकरण संख्या ..... जन्मतिथि:...../...../.....
नाम.....
पिता/पति का नाम .....
मोबाइल .....व्हाट्एप्प.....
फोन (नि.) .....(कार्या.).....
ई-मेल .....
पूरा पता .....
.....
राज्य .....देश .....पिन ☐☐☐☐☐☐
शैक्षिक योग्यता (अन्तिम): .....
व्यवसाय: व्यापार ☐ सेवारत ☐ सेवानिवृत ☐ अन्य ☐
यदि सेवारत हैं तो पद .....
संस्था का नाम-पता.....
.....
सम्बन्धित आर्यसमाज/संस्था का नाम .....
क्या आप भविष्य में सभा द्वारा भेजी गई सभी सूचनाओं के SMS/Whatsapp अपने दिए गए मोबाईल पर प्राप्त करना चाहेंगे? हां ☐ नहीं ☐

दिनांक ..... हस्ताक्षर .....

पंजीकरण संख्या ..... जन्मतिथि:...../...../.....
नाम.....
दिनांक ..... समय .....

(हस्ताक्षर कार्यालय प्रतिनिधि)

संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) द्वारा आयोजित
सिविल सर्विसेज IAS परीक्षा - 2019

भाग लेने के इच्छुक विद्यार्थी ध्यान दें

आर्यसमाज के शिक्षण संस्थानों/गुरुकुलों/सेवाकेन्द्रों/बालवाड़ियों, डी.ए.वी. संस्थानों/ विद्यालयों से शिक्षा प्राप्त ऐसे प्रतिभावान छात्र/छात्राएं जो वर्ष 2019 में आयोजित होने वाली सिविल सर्विसिज एग्जामिनेशन में भाग लेना चाहते हैं, अर्थित एवं मूलभूत आवश्यकताओ के अभाव के कारणों से परीक्षा तैयारियां नहीं कर पा रहे हैं उन सबके लिए आर्यसमाज की ओर से स्वर्णिम अवसर।

आर्य प्रतिभा विकास संस्थान की ओर से राष्ट्रवादी विचारधारा वाले, आर्य शिक्षण संस्थानों में शिक्षा प्राप्त सुयोग्य पात्रों को आर्थिक सहयोग एवं परीक्षा तैयारियों के लिए प्रशिक्षण की सुविधा प्रदान करने की घोषणा की जाती है।

योजना का लाभ प्राप्त करने के इच्छुक महानुभावों को एक लिखित/मौखिक एवं बौद्धिक परीक्षा पास करनी होगी। सफल परीक्षार्थियों में से प्रथम 40 अभ्यर्थियों को दिल्ली में आमन्त्रित करके, भोजन, आवास एवं तत्सम्बन्धी समस्त सुविधाएं निशुल्क प्रदान की जाएंगी तथा प्रशिक्षण की तैयारियां कराई जाएंगी। इस योजना का लाभ उठाने के इच्छुक विद्यार्थी/परीक्षार्थी अपने शैक्षिक प्रमाण पत्रों, वित्तीय स्थिति के विवरण तथा आवश्यक कागजातों की प्रति के साथ अपना आवेदन पत्र संस्थान की ईमेल आई.डी. dss.pratibha@gmail.com पर ईमेल करें। अधिक जानकारी के लिए मो. 9540002856 पर सम्पर्क करें। - ***व्यवस्थापक***

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 20 अगस्त, 2018 से रविवार 26 अगस्त, 2018

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 23-24 अगस्त, 2018

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 22 अगस्त, 2018

भव्य स्मारिका का प्रकाशन

सभी आर्य समाजें व आर्य संस्थाएँ विज्ञापन अवश्य भेजें

यदि आप सम्मेलन के अवसर पर प्रकाशित होने वाली स्मारिका में विज्ञापन रूप में अपनी आर्यसमाज / संस्था की विशेष गतिविधियों का विवरण प्रकाशित करना चाहते है, जिससे आर्यसमाज के इतिहास में आपकी संस्था का नाम अंकित हो। स्मारिका 15 अक्टूबर तक तैयार हो जायेगी और 23×36×8 साईज में प्रकाशित होगी। पूरे पृष्ठ का विज्ञापन साईज 7.5"×10" का एवं आधे पृष्ठ का साईज 7.5"×5" होगा। आप अपना चैक/ड्राफ्ट **"दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा - महासम्मेलन-2018"** के नाम केवल खाते में उक्त पते पर भिजवाकर कृतार्थ करें। विज्ञापन सामग्री एवं डिजाईन हमें 30 सितम्बर 2018 तक अवश्य भिजवा दें। दरें निम्न प्रकार हैं -

(श्वेत श्याम विज्ञापन)		(रंगीन- चार रंगों में विज्ञापन)	
1. चौथाई पृष्ठ	5000/-	4. चौथाई पृष्ठ	7500/-
2. आधा पृष्ठ	7500/-	5. आधा पृष्ठ	12500/-
3. पूरा पृष्ठ	10000/-	5. पूरा पृष्ठ	21000/-

विज्ञापन, संस्था/आर्यसमाज/ पारिवारिक परिचय दें : यदि आप अपना कोई विज्ञापन, अपनी संस्था/आर्यसमाज/ अपने परिवार के सम्बन्ध में सामग्री प्रकाशित करवाना चाहते हैं तो आप विज्ञापन के रूप में अपने पारिवारिक पृष्ठभूमि और कार्य का परिचय दे सकते हैं।

विद्वानों/लेखकों से निवेदन : सभी वैदिक विद्वानों, लेखकों एवं चिन्तकों से निवेदन है कि आर्य समाज के अनछुए विषयों, समसामयिक विषयों एवं आर्य जगत की महान विभूतियों जिनके कार्यों को आजतक किसी ने नहीं जाना-पहचाना उनकी स्मृतियों को दृष्टिगत रखते हुए लेखों को ए-4 साईज के पेपर पर बाएं साईड में कम से कम 2 इंच का हाशिया छोड़कर स्पष्ट अक्षरों में लिखकर या टाईप कराकर **'स्मारिका सम्पादक', अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2018, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली -110001'** पर या aryasabha@yahoo.com पर ईमेल करने की कृपा करें। **- अजय सहगल, सम्पादक**

आर्य सन्देश

क्या आप चाहते हैं कि-

आर्यसन्देश को प्रचारित प्रसारित किया जाए?

आपके चाहने वालों को भी प्राप्त हो?

आपके विदेश में रहने वाले दोस्तों को भी प्राप्त हो?

आपके मित्रों-रिश्तेदारों को भी प्राप्त हो जो इसे पढ़ने की रूचि रखते हों?

यदि हां! तो

जिन मित्रों को आर्यसन्देश पढ़ाना चाहते हैं उनकी ईमेल आई.डी. लिखकर हमें डाक से भेजें, ईमेल करें या 9540040322 पर एस.एम.एस. करें। उन्हें आर्यसन्देश प्रति सप्ताह इंटरनेट द्वारा भेजा जाता रहेगा। - सम्पादक

प्रतिष्ठा में,

तेजी से बढ़ रहे हैं आर्यसमाज YouTube चैनल के दर्शक

thearyasamaj.org

85,00,000 + लोगों ने देखा अब तक

आप भी देखें और सब्सक्राइब अवश्य करें और अपने मित्रों, सम्बन्धियों को देखने की प्रेरणा करें।

यदि आप लगातार नई वीडियो देखना/सूचना प्राप्त करना चाहते हैं तो घंटी बटन दबाकर सब्सक्राइब करें।

यदि आप भी अपने आर्यसमाज के आयोजनों - भजन, प्रवचन, सन्देशात्मक कार्यक्रम, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों को इस चैनल पर अपलोड कराने के लिए upload@thearyasamaj.org पर भेजें। - महामन्त्री

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह